रोग अऊ रोगदाई अऊ ओखर रोके के उपाय–पानमन मा फफूँद की पर्‌रा परत होये ले डायथेन एम –45 ई.सी. के 0.05 प्रतिशत घोल ल काम मा लाथन । डाईबेक रोग होवे ले डाईथेन –जेड 78 का 0.3 प्रतिशत घोल ल छिड़क देथन।

दोहन अऊ इकट्‌ठा करथन–सर्पगन्धा के फसल हर 18 महिना मा तियार हो जाथे। भांदो –कुंवार (अगस्त –सितम्बर) महिना मा से अघ्घन–पुस महिना तके के फर ल इकट्‌ठा करके 1–2 घंटा पानी मा भिगोके अऊ मसल के बीजा मा निकालथन अऊ सुखाथन ओखर बाद मा निकाले बीजा मन मा साफ पानी मा धोके सुखाये के बाद मा ओला आने बाला बोनी बर सुरक्षित अवस्था मा इकट्‌ठा कर लेथन। 100 बीजामन के भार हर अंदाजन 3–4 गिराम होथे। आने बरस के मांघ (जनवरी) महिना मा जरीमन ल खुदाई कर साफ जरीमन ल बोरा मा भरके सुरक्षित जगह मा रखथन।

प्रसंस्करणः–

भुँईया ले निकले जरीमन मा चिपके माटी अऊ आने गंदगी ल पानी मा अच्छा से धोलेथन जेखर से जरी ले छाली अलग न होवे काबरकि छाली मा सबले जियादा रासायनिक तत्व होथे जरीमन ल साफ धोके ओला साफ छांवदार बड़िया जगहमन मा रखलेथन।

उत्पादन अऊ उपजः–

अंदाजन 25–28 क्विंटल सुख्खा जरीमन ल हर हेक्टेयर पाथन अऊ 40–50 किलोगिराम बीजा पाथन। बाजार मा मूल्य –सर्पगन्धा के वर्तमान मा जरी के बाजार मूल्य हर 100–150 रू. हर किलोगिराम अऊ बीजामन के मूल्य 300–400रू. हर किलोगिराम होथे।

अंतरवर्तीय फसलः–

सर्पगन्धा हर 18 महिना वाला फसल होथे। शुरू मा एहर जल्दी नि बाड़े अऊ जियादा मात्रा मा फायदा उठाये बर सर्पगन्धा के कतारमन के बीचु मा सोयाबीन अऊ लहसून के फसल लगाके किसान मन जियादा आमदनी पा सकथें।

आमदनी अऊ खर्चाः–

सर्पगंधा के खेती मा हर हेक्टेयर मा किसान ल अंदाजन रू. 1.00– 1.25 रू. लाख के आमदनी पा सकथे।

अनुवादक

आनन्द कुमार दास, आलोक कुमार थवाईत,
कु. रंजीता पटेल, श्रीमती शशिकिरण बर्वे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

सर्पगन्धा

(*Rauvolfia serpentina*)

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
डाकघर – आर.एफ.आर.सी., मण्डला रोड
जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

सर्पगन्धा

पहिचानः-

सर्पगन्धा एक ठन बढ़िया दवाई वाला जरी–बुटी हावे। ऐखर वानस्पतीक नाम हर राउल्फिया सर्पेन्टाइना हावे येहर एपोसाइनेसी कुल के सदसय हावे मध्यप्रदेश के बन मा सर्पगन्धा के बुटी बहुत थोड़कन मात्रा मा थोड़कन जगह मा उपलब्ध हावे। लेकिन दवाई बनावे खातिर एखर मांग होथे अऊ बाजार मोल अधिक हावे जेखर कारण किसान मन एखर खेती मा अबड़ ध्यान देवत हावे। जेखर खातिर से सर्पगन्धा के खेती हर सफलता के नान्हू –नान्हू कदम ल बड़ात हावे अऊ ऐखर मांग घलो बाड़थ हावे। सर्पगन्धा के खेती बीजा ल रूपाई करके करथन। ऐखर फसल अंदाजन 18–30 महिना मा पुरा हो जाथे।

वानस्पतिक विवरण -

सर्पगन्धा के पौधा के ऊँचाई एक मीटर तक होथे। नार बेलनाकार पान हर चमकथे एक संग चक्र मा मालाकार आयताकार पर्णवृन्तयुक्त होथे। फूल हर गुच्छा मा चैत ले कार्तिक महिना (अप्रैल से नवम्बर) मा होथे अऊ येहर पर्रा –गुलाबी रंग के होथे। बीजा गोलवा, गुलाबी, कत्थई, अऊ पाके अवस्था मा करिया रंग के होथे।

भौगोलिक विवरण-

येहर हिमालय के नीचु ले लेके बंगाल अऊ आसाम, मेघालय की सीमा, झारखण्ड, तामिलनाडू, केरल के दक्षिण–पश्चिम भाग से लेकर, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ तक मा अपन आप हि बड़ जियादा मात्रा मा जाथे पाये। भारत के अलावा यह पौधा पाकिस्तान श्रीलंका, चीन,जापान, देशों मा घलो पाये जाथे।

औषधीय उपयोगः-

येखर जड़ मा दवाई के गुन पाये जाथे। ऐखर जड़ मा पित्त नाशक अऊ ज्वरहन होथे। ये हा रक्तचाप ल कम करथे, पागलपन दूर करथे, अऊ अनिद्रा, बुखार मा काम आथे। ऐखर पान के रस मा ऑखि के पुतली (कार्निया) के इलाज होथे। ऐखर जड़ी के उपयोग आंत के बिमारी, हैजा, पुराना जर अऊ जल्दी प्रसव मा काम आथे।

सक्रिय घटकः-

एखर जड़ मा 1.7 – 3.0 प्रतिशत तक ले एल्केलाइड्स पाये जाथे, ऐमा रिसर्पिन, एजामेलिन अऊ सर्पेन्टिन परमुख होथे। ऐखर अलावा स्टार्च, गोन्द अऊ लवण घलो पाये जाथे।

माटी अऊ जलवायुः-

खेती बर बलुइ। दोमट अऊ काली माटी जेखर पी. एच. 6–8.5 होथे ओहा उपयुक्त होथे।

कृषि तकनीकः-

खेती के तैयारीः–

खेत के दू –तीन बार गर्मि महिना मा जुताई करके अंदाजन 15–20 टन गोबर खात्तु प्रति हेक्टेयर के दर से मिलाथे। खेत मा कतार से कतार के दूरी 45 से.मी. तक बनाथे। पाटा चलाकर खेत ला बरोबर करथे अऊ उचित पानी निकासी बर प्रबंध करथे।

प्रवर्धनः–

समान्यतः सर्पगन्धा के प्रवर्धन बीजा संग करथे परन्तु ऐखर प्रवर्धन तने के कलम अऊ जड़ संग घलो कर सकथन।

बुआईः–

बीजा के बोए के पहिले 24 घंटा पानी मा भीगोथे ओखर बाद मा 2–3 ग्राम थाइरम प्रति किलोग्राम के दर से बीजा को उपचारित करथे। एक हेक्टेयर बर लगभग 4–6 किलोग्राम बीजा लगाथे। बोए के काम ला 25 (अप्रेल) चेंत्र से 10 (मई) बैसाख तके करथन। पौधा ले पौधा के दुरिया ल 45 से.मी. रखथे अऊ पौधा ल सावन (जुलाई) अऊ भादों के पहिले सप्ताह मा लगाथे।

उर्वरकः–

रोपण के बेरा मा 50 हर पौधा वर्मी कम्पोस्ट डाले ले बड़िया परिमाण आथे। गोबर के खातु सबले बड़िया रथे। उर्वरक का एक तिहाई भाग रूपाई के बेरा मा अऊ बाकि दू भाग मा 6–6 महिना के अंतर मा देले बड़िया रथे।

निंदाईः–

गुड़ाई अऊ सिंचाई –पहिले बरस मा अंदाजन 3–4 बार अऊ दूसरे बरस 2–3 बार निंदाई –गुड़ाई करे हर जरूरी रथे। गरम महिना मा 2–3 बार अऊ ठंडा महिना मन मा 1–2 बार सिंचाई करथन।